दुष्यन्त कुमार के ग़ज़ल संग्रह 'साये में धूप' में अभिव्यक्त विविधा संवेदनाए

प्रस्तुतकर्त्री : सुनीता कुमारी

कविता की परिभाषा देते हुए आचार्य विश्वनाथ ने लिखा है- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' अर्थात् रसयुक्त वाक्य ही काव्य है। जिस वाक्य को पढ़कर या सुनकर हमें आनन्द की प्राप्ति हो या जो वाक्य हमें भावविभोर कर दे उसे ही हम 'काव्य' कहते हैं। प्राचीनकाल में इसी बात को èयान में रखकर काव्य की रचना की जाती थी। महाकाव्यों में तो एक अंगी रस की परिकल्पना भी की जाती रही ह अर्थात् काव्य में एक ही रस की प्रधाानता रहे तथा बाकी रस उसके सहायक के रूप में आएं। जैसे 'रामचरितमानस' में शान्त रस अंगी रस के रूप में आया है। यदि हम वर्तमान युग के काव्य को इसी कसौटी पर परखें तो शायद कुछ गिनी-चुनी रचनाए¡ ही इस परिभाषा पर खरी उतर सकें। आज के भौतिकवादी और बु)वादी युग में कवियां ने अपनी रचनाओं को भी हृदय का भोजन न मानकर बु) की खुराक मान लिया है। इसी के अनुसार वे विभिन्न वादों मे जकड़ी हुई कविताए¡ लिखने लगे। इसी के परिणामस्वरूप स्वातंत्र्योÙार हिन्दी कविता बड़ी तेज़ी से विभिन्न वादों से गुजरी(जैसे कि - प्रयोगवाद, नयी कविता, नकेनवाद, समकालीन कविता, अकविता, सहज कविता, युयुत्सुवादी कविता, नवगीत आदि न जाने कितने ही वाद व्यक्ति-मात्र को प्रतिष्ठित करने के लिए चलाए गए। इन वादों के परिणामस्वरूप कविता में काव्यत्व का हास हुआ। कविता में गद्य की पंक्तिया¡ लिखकर ही लोग स्वयं को कवि मानने लगे। ऐसी रचनाए¡ देखकर हमें उन कवियों तथा कविताओं की प्रतिभा तथा प्रतिष्ठा पर संदेह होता है। इसी बात को ग़ज़लकार सारस्वत मोहन 'मनीषी' ने इस तरह से व्यक्त किया है-

''गद्य बिक रहा है काव्य के नाम पर तो जोर शोर से छन्द को तो मुक्ति मिल गई, नियम सभा भंग हो गए।''[1]

इन सब वादों और बु)वादी तÙवों से अलग ग़ज़ल अपने पारम्परिक स्वरूप और परिभाषा पर खरी उतरती हुई आगे बढ़ी है। ग़ज़ल का जन्म भले ही विदेशी धारती पर हुआ हा परन्तु यह भारतीय भूमि पर उपयुक्त वातावरण पाकर खूब फली-फूली। अरबी-फारसी तथा उर्दू में ग़ज़ल रोमानी भाव तथा प्रेम-पीड़ा लिए हुए थी। इसका विषय प्रेमी-प्रेमिका के विरह-मिलन के किस्से गाना, शमा-परवाने की कहानी कहना, जाम और मयखाने तक ही सीमित था। वही हिन्दी में आकर ग़ज़ल अपने पुराने शिल्पगत ढा¡चे को बरकरार रखते हुए भी भाव के स्तर पर उससे अलग हो गई। हिन्दी में यह जनभावनाओं की अभिव्यक्ति का साधान बन गई। यदि साहित्य जनता की चिÙावृिÙ का संचित प्रतिबिंब होता है तो वर्तमान हिन्दी ग़ज़ल, साहित्य की इस परिभाषा पर खरी उतरती हुई जनता-जनार्दन की चिंताओं, आकांक्षाओं तथा आशा - निराशाओं को प्रकट करने का कार्य कर रही है।

'गजल' का शाब्दिक अर्थ है - प्रेमिका अथवा रूपवती नारियों से वार्तालाप। 'गजल' अरबी भाषा का एक महत्वपूर्ण शब्द है जिसका कोशगत अर्थ है - कातना, बुनना। फारसी के एक विद्वान ने ग़ज़ल के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि सुखन अज जनाना अर्थात नारी के सौंदर्य का वर्णन या नारी से बातचीत। उल्लेखनीय है कि कुछ विद्वान गजल का संबंधा फारसी के शब्द 'गजाला' से मानते हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ है - मृग के नयन या मृग जैसे नयनों वाली अर्थात् मृगनयनी। इसी प्रकार कुछ अन्य विद्वान ग़ज़ल का संबंधा अरबी भाषा के एक अन्य शब्द 'गजाल' से मानते हैं। 'गजाल' का अर्थ उस कराह या चीख से भी माना जाता ह जो 'गजाला' हिरन तीर

[1] सारस्वत मोहन 'मनीषी', बूंद-बूंद वेदना, पृ. 63

चुभने के बाद बेबसी के आलम में निकालता है। संभवत: इसीलिए ग़ज़ल में अधिाकांशत: दु:ख-दर्द, पीड़ा, कसक, टीस और वेदना की अभिव्यक्ति होती आई है।

एक अन्य किंवदता के अनुसार अरब में 'गजल' नाम का एक व्यक्ति था, जिसने अपनी सारी उम्र शराब पीने और इश्क में गुजार दी। वह हमेशा हुस्न और इश्क का प्रशंसा किया करता था। इसीलिए उन शेरों को लोग ग़ज़ल कहने लगे, जिनमें हुस्न और इश्क का वर्णन हो। अत: गजल का पारस्परिक संबंधा हुस्न, इश्क और नारी से संबंधित भावों से है जो प्रेम, सौंदर्य, सुकुमारता, मिलन विरह, उलाहनों आदि के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। इस संदर्भ में डॉ. पूनम अग्रवाल का कथन है कि गजल के शाब्दिक एवं व्युत्पUिपरक अर्थ के संबंधा में पर्याप्त भिन्नता होने के बावजूद यह तथ्य सर्वमान्य है कि 'ग़ज़ल' एक अरबी शब्द है, जो प्रेमी-प्रेमिका के वार्तालाप के लिए प्रयोग किया गया। ग़ज़ल अरबी भाषा से फारसी में आई। इसके साथ ही ग़ज़ल का अर्थ भी विस्तृत होता गया। फारसी से ग़ज़ल उदू में आई। उर्दू कवियों ने ग़ज़ल के इसी फारसी स्वरूप को स्वीकार किया। उर्दू ग़ज़ल में सूक्ष्म तथा स्थूल दोनों प्रकार के प्रेम की अभिव्यक्ति हुई। उर्दू में ग़ज़ल ने फारसी से अधिाक लोकप्रियता प्राप्त की है। उर्दू ग़ज़ल का दायरा बढ़ता गया और यह अपने शाब्दिक अर्थ स बहुत आगे निकल गई। उर्दू ग़ज़ल की विषय-वस्तु में व्यक्ति, समाज, अर्थ, धार्म, राजनीति तथा इतिहास आदि भी सम्मिलित होते गए। ग़ज़ल के उस्ताद शायर निश्तर खानकाही का कहना है कि ''ग़ज़ल की विधाा अपने मूल रूप में सामंती युग की देन है और यह कसीदे से अलग हुआ वह अंश ह जिसने दरबारों से निकलकर पहले सूफी संतों की दरगाहों पर अपने झंडे फहराए और फिर आम-आदमी के जीवन से जुड़ता चला गई। उर्दू से होती हुई ग़ज़ल हिंदी भाषा में आई। अमीर खुसरो, कबीर तथा भारतेंदु हरिश्चंद आदि ने इस विधाा के अंतर्गत जो कुछ लिखा, उसे ग़ज़ल नाम ही दिया। भारतेंदु युग मिर्जा गालिब के तुरंत बाद का समय है। मिर्जा गालिब का युग उर्दू ग़ज़ल का

स्वर्ण युग था। इससे पहले दक्खन के शायरों ख्वाजा मीर दर्द, नजीर अकबराबादी, शाह बशार, मिर्जा रफी सौदा तथा मीर तकी मीर जैसे शायरों ने खूब ग़ज़ल कहीं।

ग़ज़ल का जन्म अरबी भाषा में हुआ। सामंती युग में वहा¡ बादशाह की तारीफ़ में कसीदे ¼प्रशंसात्मक काव्य½ लिखे जाते थे। उनमें से काव्य का एक टुकड़ा 'तश्बीब' के नाम से जाना जाता था। इस टुकड़े में कवि को अपने मन की बात कहने की स्वतंत्रता रहती थी। ये कसीदे से पूर्व की पंक्तिया¡ होती थी तथा इनमें सौंदर्य, प्रेम और वियोग आदि की भावनाए¡ होती थीं। यही तश्बीब कसीदे से अलग होकर एक स्वतंत्र विधाा के रूप में ग़ज़ल के रूप में सामने आई। डॉ. माज़दा असद के अनुसार, ßतकरीबन चौदह सौ वर्ष पहले, अरब के सामंती समाज में तत्कालीन बादशाहों और अमीरों की विरुदावली बखान के लिए अवतरित काव्य रूप, तश्बीब या कसीदा से प्रेम और Ü¡गार संबंधाी शे'रों को निकालकर एक जगह इकट्ठा कर देने के परिणामस्वरूप ही ग़ज़ल का प्रादुर्भाव हुआ।Þ[2]

डॉ. वज़ीर आगा के अनुसार, ßग़ज़ल के प्रारंभ के बारे में आम धाारणा यह है कि उसने अरबी कसीदे के उस प्रारम्भिक भाग से जन्म लिया जिसे तश्बीब, नसीब या कौल ¼कसीदे के शुरू के शेर, जिनमें किसी घटना का वर्णन होता है½- ग़ज़ल नाम मिला।Þ[3] डॉ. रामदास नादार के अनुसार, ßउर्दू शायरी, फ़ारसी शायरी का अनुकरण है और फ़ारसी, अरबी शायरी का। अरबी शायरी में कसीदों ¼प्रशंसागीत½ की तश्बीब ¼आरंभ½ में ग़ज़ल भी शामिल थी। अर्थात् कसीदों के आरंभ में आशिकाना ¼प्रेमपरक½ विषय भी लिखे जाते थे। इसको ग़ज़ल अथवा तग़ज़्ज़ल कहा जाता था। यह तम्हीद ¼आरंभ या भूमिका½ होती थी। फ़ारसी कवियों ने इस अंश को ग़ज़ल के नाम से

[2] ¼संपादक½ विश्वनाथ प्रसाद, दस्तावेज़ ग़ज़ल विशेषांक, पृ. 67
[3] ¼संपादक½ डॉ. वज़ीर आगा, उर्दू शायरी का मिजाज़, पृ. 194

एक स्थायी काव्य-रूप बना दिया।Þ[4]

डॉ. नरेश के अनुसार - ßग़ज़ल काफ़िया-रदीफ़ के बंधान में रहकर, एक लयखंड में रचे गए विभिन्न शे'रों की माला होती है, जिसका पहला मनका 'मतला' और अन्तिम मनका 'मक़ता' होता है।Þ[5] चन्द्रसेन विराट के अनुसार, ßमेरी नज़र में ग़ज़ल एक ऐसी छन्दोब) काव्य विधाा है जिसमें कवि को हर शेर में विभिन्न कथ्य प्रतिपादित करने की छूट है तथापि सम्पूर्ण काव्य-रचना में एक विशिष्ट छंद विधाान का अनुशासन पालित है एवं एक सांस्कृतिक भावमयी, सम्पषणयुक्त, रसासिक्त भावव्यंजना अनुस्यत है।Þ[6] राजेन्द्र तिवारी ग़ज़ल की परिभाषा भी एक शेर में देते हैं-

''कोई कहानी नहीं है, कोई बयान नहीं
ग़ज़ल ग़ज़ल है किसी मुल्क की ज़बान नहीं।''[7]

ज्ञान प्रकाश विवेक के अनुसार - ßदो मिसरों की सबसे आसान और सबसे कठिन विधाा है - ग़ज़ल। ग़ज़ल मूड़ आर मिज़ाज का नाम है। जिस ग़ज़ल में ग़ज़ल का मूड़ और मिज़ाज़ नदारद है, वह ग़ज़ल नहीं हो सकती।Þ[8]

दष्यन्त कुमार की गजलों का समीक्षात्मक अधययन किया जाए तो हम पाते हैं कि उनकी ग़ज़लां में संवेदना के विविधा रूप दृष्टिगोचर होते हैं। उन्होंने अपनी ग़ज़लां में राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक और अन्य संवेदनाओं का चित्रण किया है। राजनातिक संवेदना के बारे में ग़ज़लकार कहता है कि राजनेता केवल भाषण और आश्वासन तक सीमित रहते है। उन्हें जनता की संवेदनाओं से कुछ लेना-देना नहीं है-

---

[4] उर्दू ग़ज़ल परंपरा, सरकारी युग गणतन्त्र विशेषांक, पृ. 18
[5] डॉ. नरेश, हिन्दी ग़ज़ल शिल्प और संरचना, पृ. 3
[6] ¼संपादक½ डॉ. सरदार मुजावर, हिन्दी ग़ज़ल ग़ज़लकारों की नज़र में, पृ. 31
[7] वही, पृ. 125
[8] ज्ञान प्रकाश विवेक, हिन्दी ग़ज़ल की विकास यात्र, पृ. 102

''कहा¡ तो तय था चिरागा¡ हरेक घर के लिए,

कहा¡ चिराग मयस्यर नहीं शहर के लिए।''[9]

ग़ज़लकार कहता है कि क्रान्ति या विद्रोह से ही व्यवस्था बदल सकती है। इसलिए लोगों में क्रान्ति की भावना जीवित रहनी चाहिए –

''आप दीवार गिराने के लिए आए थे

आप दीवार उठाने लगे ये तो हद है।

खामोशी शोर से सुनते थे कि घबराती है,

खामोशी शोर मचाने लगे, ये तो हद है।''[10]

ग़ज़लकार दुष्यन्त ने परिवेशगत संवेदना का भी चित्रण किया है और बदलते परिवेश का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है कि –

''यहा¡ दरख्तों के साये में धूप लगती है,

आओ यहा¡ से चलें और उम्र भर के लिए।

हालाते जिस्म, सूरते जां, और भी खराब,

चारों तरफ खराब, यहा¡ और भी खराब।

मूरत स¡वारने में बिगडती ही चली गयी,

पहले से हो गया है जहां और भी खराब।''[11]

लोग संवेदनाहान हो रहे है। लोगों में दूसरों के प्रति प्रेम भावना का अभाव बढ़ता जा रहा है। आज आदमी आदमी न रह कर आदमखोर हो गया है–

[9] दुष्यन्त कुमार, साये में धूप, पृ. 13
[10] दुष्यन्त कुमार, साये में धूप, पृ. 55
[11] दुष्यन्त कुमार, साये में धूप, पृ. 48

''अब तो इस तालाब का पानी बदल दो,

ये कंवल के फूल कुम्हलाने लगे हैं।

अब नयी तहजीब के पेशे नजर हम,

आदमी को भूनकर खाने लगे हैं।''[12]

बदलते परिवेश का प्रभाव प्रकृति पर भी पड़ रहा है । लोगों ने प्रकृति को भी गुलाम बनाने की कोशिश की है। जिसके स्वरूप प्रकृति भी अपना स्वाभाविक रूप बदलने लगी है–

''यहां तक आते आते सूख जाती हैं कई नदियां,

मुझे मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा।''[13]

ग़ज़लकार चाहता है कि लोगों में संवेदनाएं जीवित रह ताकि मानवता बची रहे और लोग एक दूसरे के सुख–दुख में भागीदार बनें –

''जियें तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले,

मरें तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए।''[14]

सामाजिक संवेदनाओं पर भी ग़ज़लकार की पैनी नजर है। इसलिए वह पुरानी गली–सड़ी सामाजिक व्यवस्था को बदलने का पक्षधार है–

''पुराने पड़ गए डर, फेंक दो तुम भी,

ये कचरा आज बाहर फेंक दो तुम भी।

लपट आने लगी है अब हवाओं में भी,

ओसारे और छप्पर फेंक दो तुम भी।

---

[12] दुष्यन्त कुमार, साये में धूप, पृ. 14
[13] दुष्यन्त कुमार, साये में धूप, पृ. 15
[14] दुष्यन्त कुमार, साये में धूप, पृ. 13

यहां मासूम सपने जी नहीं सकते,

इन्हे कुंकुम लगा कर फेंक दो तुम भी।''[15]

गरीबी पर भी ग़ज़लकार ने अपनी संवेदनाएं अभिव्यक्त की हैं । वह कहता है कि गरीब लोग अपनी गरीबी को ढंकने के लिए हर संभव प्रयास करता है–

''न हो कमीज तो पांवों से पेट ढंक लेंगे,

ये लोग मुनासिब हैं इस सफर के लिए।''[16]

व्यवस्था और सÙाधाारी लोगों के सामने सभी लोग नतमस्तक है। ग़ज़लकार को इस बात पर हैरानी होती है कि जनता इन नेताओं के आश्वासनों को इतने वर्षो से क्यों झेल रही है–

''यहां तो सिर्फ गूंगे और बहरे लोग बसत हैं,

खुदा जाने यहां पर किस तरह जलसा हुआ होगा।''[17]

यदि कोई व्यक्ति इस भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति विद्रोह करता है तो उसे तरह–तरह की यातनाएं देकर उसकी जुबान बन्द करने की कोशिश की जाती है–

''वो आदमी नहीं है मुकम्मल बयान हैं,

माथे पे उसके चोट का गहरा निशान हैं।

वो आदमी मिला था मुझे, उसकी बात से,

ऐसा लगा कि वो भी बहुत बेजुबान है।''[18]

ग़ज़लकार को इस बात पर संतोष है कि जनता में आशावादी भावना का संचार हो रहा है –

[15] दुष्यन्त कुमार, साये में धूप, पृ. 33
[16] दुष्यन्त कुमार, साये में धूप, पृ. 13
[17] दुष्यन्त कुमार, साये में धूप, पृ. 15
[18] दुष्यन्त कुमार, साये में धूप, पृ. 59

''इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है,

नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है।

एक चादर सांझ ने सारे नगर पर डाल दी,

यह अंधेरी की सड़क उस भोर तक जाती तो है।''[19]

संदर्भ ग्रंथ

दुष्यन्त कुमार, साये में धूप
उर्दू ग़ज़ल परंपरा, सरकारी युग गणतन्त्र विशेषांक
डॉ. नरेश, हिन्दी ग़ज़ल शिल्प और संरचना
सारस्वत मोहन 'मनीषा', बूंद-बूंद वेदना
¼संपादक½ डॉ. वज़ीर आगा, उर्दू शायरी का मिजाज
¼संपादक½ विश्वनाथ प्रसाद, दस्तावेज़ ग़ज़ल विशेषांक
¼संपादक½ डॉ. सरदार मुजावर, हिन्दी ग़ज़ल ग़ज़लकारों की नज़र में
ज्ञान प्रकाश विवेक, हिन्दी ग़ज़ल की विकास यात्र

[19] दुष्यन्त कुमार, साये में धूप, पृ. 16